महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16
प्रकाशन की तिथि—2 सितम्बर 2014

सृष्टि संवत्- 1, 96, 08, 53, 115
युगाब्द-5115, अंक-86-74, वर्ष-8,
आश्विन कृष्ण पक्ष, सितम्बर -2014
शुल्क- 5/ रुपये प्रति, द्विवार्षिक शुल्क-100/ रुपये
डाक प्रेषण तिथि :5-6सितम्बर, कुल पृष्ठ-8

प्रेषक : सम्पादक, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्ष गुरुकुल, टटेसर जौन्ती, दिल्ली-81

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com सम्पर्क सूत्र: 9350945482 Web: www.aryanirmatrisabha.com

संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य' सह-संपादक : आचार्य सतीश

इन्द्रस्याङ्गिरसां चेष्टौ विदत्सरमा तनयाय धासिम्। बृहस्पतिर्भिनदद्रिं विदद्गाः समुस्रियाभिर्वावशन्त नरः -ऋ० १।११।६२।३

व्याख्यान—हे (नरः) सुखों को प्राप्त कराने वाले मनुष्यो! जैसे (सरमा) विद्या धर्मादिबोधों को उत्पन्न करने वाली माता (तनयाय) पुत्र के लिये (धासिम्) अन्न आदि अच्छे प्रदार्थों को (विद्त) प्राप्त करती है। जैसे (बृहस्पतिः) बढ़े बढ़े पदार्थों को रक्षा करने वाला सभाध्यक्ष जैसे सूर्य (उस्रियाभिः) किरणों से (अद्रिम्) मेघ का (भिनत्) विदारण और जैसे (गाः) सुशिक्षित वाणियों को (विदत्) प्राप्त करता है। वैसे तुम भी (इन्द्रस्य) परमैश्वर्य वाले परमेश्वर सभाध्यक्ष वा सूर्य (च) और (अङ्गिरसाम्) विद्या धर्म और राज्य वाले विद्वानों की (इष्टौ) इष्ट की सिद्ध करने वाली नीति में विद्यादि उत्तम गुणों का (संवावशन्त) अच्छे प्रकार वार वार प्रकाश करो जिससे सब संसार में अविद्यादि दुष्ट गुण नष्ट हों।

सम्पादकीय

धर्मान्तरण के विभिन्न स्वरूप

इस राष्ट्र में एक लम्बे काल (एक हजार साल से भी ज्यादा) से धर्मान्तरण की एक ही धारा चल रही है। मत-परिवर्तन के नाम पर केवल हिन्दुओं अर्थात् आर्यवंशियों का ही मत-परिवर्तन करवाया जा रहा है। हिन्दू आर्य वंशी ही हैं क्योंकि हिन्दू आर्यो (जैसे भी राम व श्री कृष्ण)को ही अपना पूर्वज मानते हैं, अत:वे आर्य वंशी ही कहलायेंगे। वैसे तो इस राष्ट्र की लगभग सारी जन संख्या ही आर्यो की वंशज है लेकिन चूंकि मुसलमान और ईसाई श्री राम व श्री कृष्ण अर्थात् आर्यों को अपना पूर्वज ही नहीं मानते इसलिए उन्हें आर्य वंशी क्यों कहें? हाँ, हिन्दू अवश्य अपने आप को आर्य वंशी कहलाने के अधिकारी हैं क्योंकि आर्यो की परम्पराओं के सबसे निकट वही हैं। हाँ, यदि अन्य कोई भी इस परम्परा को स्वीकार करे तो वह भी इसी श्रेणी में आ जाएगा।

तो इस राष्ट्र में हजारों सालों में धर्मान्तरण के रुप में केवल हिन्दुओं का मत-परिवर्तन करके उनको मुस्लमान और ईसाई बनाया जा रहा है। जबकि इसके विपरीत की घटनाएं नगण्य ही होती हैं। और यह धर्मान्तरण विदेशियों के प्रत्यक्ष शासन के अन्तर्गत तो था ही उसके उपरान्त इस तथाकथित् धर्म निरपेक्ष व्यवस्था में भी निरन्तर चल रहा है। प्रारम्भ में धर्मान्तरण जहां तलवार के बल पर था, उसके बाद उनके नए-२ रुप आते चले गए। नए-नए तरीके आविष्कृत होते गए। कभी शासन के भय से, कभी स्वार्थ से, कभी डरा-धमकाकर, कभी आर्थिक बोझ लादकर, कभी अन्ध विश्वास में फंसाकर, कभी दूसरे प्रकार के प्रलोभन देकर, कभी धोखा देकर यह धर्मान्तरण होता ही रहा है, आज भी हो रहा है। और जहां पर ये बहुसंख्यक हैं वहाँ आज भी इनका तरीका वही तलवार के बल पर है, जैसे ईराक व सीरिया में। बस तलवार का स्थान आधुनिक हथियारों ने ले लिया है।

हाँ, हमारे देश में धर्मान्तरण का एक नया तरीका पिछले कुछ वर्षो से चल रहा है और जो आज-कल चर्चा का विषय बना हुआ है, वह है लव जेहाद। यह बहुत तेजी से फैलता हुआ एक सुनयोजित षड्यन्त्र है। और इस देश के तथाकथित् धर्म निरपेक्ष बुद्धिजीवी और नेता यदि इसे सुनियोजित षड्यन्त्र नहीं मानते तो इन प्रश्नों का उत्तर दें। (१)विभिन्न धर्मों के प्रेम-विवाह प्रसंगों के लगभग सभी मामलों में लड़की हिन्दू और लड़का मुस्लमान ही क्यों होता है? (२) सभी मामलों में धर्म परिवर्तन हिन्दू लड़की का ही क्यों करवाया जाता है, मुस्लमान लड़के का क्यों नहीं? (३) यदि ये सार्थक प्रेम-विभाह ही हैं तो लगभग सभी मामलों में विवाह के चार-पाँच वर्षों के उपरान्त दो-तीन बच्चे पैदा कर उन लड़कियों को तलाक क्यों दे दिया जाता है? क्या वह समाज शास्त्र के नियमों के अनुसार है या सुनियोजित षड्यन्त्र है? वे लोग विचार करें जो इसे केवल सामाजिक

शेष अगले पृष्ठ पर

सम्पादकीय का शेष.....

घटनाएं मानते हैं। एक और कारण से भी यह योजनाबद्ध लगता है कि युवक अपनी वास्तविकता छुपा कर युवतियों को बहकाते हैं। अपना नाम छुपाते हैं, अपनी पहचान छुपाते हैं, अपन मजहब छुपाते हैं। जो सम्बन्ध इस प्रकार से धाखे से स्थापित किए जाते हैं उनको किस प्रकार सही माना जा सकता है। और विवाह होते ही अपनी वास्तविकता पर आ जाते हैं। हाल ही में राँची में राष्ट्रीय स्तर की निशानेबाज के साथ यही सब हुआ। रकीबुल हसन ने कैसे रंजीत सिंह बनकर तारा को सारा बनाने का षड्यन्त्र किया और एक प्रतिभावान खिलाड़ी का जीवन बर्बाद कर दिया। ऐसी हजारों लड़कियों का जीवन प्रतिवर्ष इस प्रकार से बर्बाद किया जा रहा है। हिन्दुओं की अनेक लड़कियाँ इस प्रकार जीवन बर्बाद कर बैठती हैं इस लव जेहाज के षड्यन्त्र में फंसकर। धर्मान्तरण का यह एक घिनौना स्वरूप हम सब के सामने है।

दुर्भाग्य यह है कि यहां की सरकारें इसे मानने को तैयार नहीं। दो-दो राज्यों के उच्च न्यायालयों ने इस मामले की जाँच के लिए कहा है लेकिन यहां की सरकारों ने किसी भी जाँच एजेंसी से इनकी जाँच नहीं करवाई। उत्तर प्रदेश के न्यायालय ने तो २००६ में ही लव-जेहाद की घटनाओं की जाँच के लिए कहा था, लेकिन इस प्रकार की घटनाएं बढ़ने के उपरान्त भी वहां की धर्म निरपेक्ष कही जाने वाली सरकारों ने अपने को अल्पसंख्यकों का सबसे बड़ा हितैषी सिद्ध करने के लिए इन सब का संज्ञान ही नहीं लिया, अब यह रोग देश के बहुत बड़े हिस्से में महामारी का रुप धारण कर चुका है।

और इन विवाहों का परिणाम उन युवतियों के लिए बड़ा ही दर्दनाक होता है। चार-पाँच साल के बाद दो-तीन बच्चे पैदा कर वे धर्मान्ध लड़के उनके जीवन को बर्बादकर देते हैं बड़ी ही आसानी से। मात्र तीन बार तलाक कहकर छोड़ दिया जाता है। न्यायालय जाने पर निकाह के समय मेहर के रुप में तय हजार-पाँच सौ की राशि उस लड़की के हाथ में पकड़ा कर उसे जीवन भर के दर-दर भटकने को, आत्महत्या करने को या पेट भरने के लिए वेश्यावृति जैसे घिनोने कार्य तक को अपनाने को विवश कर दिया जाता है। यही वास्तविकता इन सब घटनाओं की।

आर्यों! धर्मान्तरण और हिन्दू यूवतियों को बर्बाद करने के इस षड्यन्त्र को रोकना ही चाहिए। और इसे रोका जा सकता है अपने समाज को जागरूक करके, ऐसे षड्यन्त्रकारियों का पर्दाफाश करके, ऐसे लड़कों पर प्रारम्भ से ही कठोर दृष्टि रखकर। अपनी आर्य संस्कृति, श्रेष्ठ संस्कृति जहां योग्य को और प्रसिद्धि से विवाह का विधान है, को अपनाकर जन-जन तक पहुँचाकर इसे रोका जा सकता है। घरों में युवक-युवतियों को इस लव-जेहाज की पूरी वास्तविकता व परिणामों से आवगत कराया जाए जिससे हमारी युवतियाँ जिन्हें योग्यता अर्जित कर नेतृत्व करना है वे ऐसे कुचक्रों से बच सकें। युवक व युवतियों को आर्य व आर्या बनाना ही इस का स्थाई समाधान है, यही हम सब का कर्तव्य है तथा इसी के लिये हमें संघर्षरत रहना है।

मुझे वेद-विद्या दे दो

माँ ओ माँ, मुझे वेद विद्या दे दो
वेद विद्या पाकर में मनुष्य बन जाऊं
सिद्धान्त सीखू मैं, दुनिया को जनाऊं
माँ ओ माँ, मुझे वेद विद्या दे दो.....
वेद-विद्या का यदि प्रचार हो जाए
सभी मनुष्यों का स्वाभिमान लौट आए
शहीदों को उनका सम्मान मिल जाए
गद्दारों को भी भंयकर मौत मिल जाए
माँ ओ माँ, मुझे वेद विद्या दे दो......
घर-घर राष्ट्र भक्ति की ही चर्चा होवे
शिक्षार्थी केवल देश भक्ति अपनावें
देश को संभाले बिना ना कभी विदेश जावें
देश के लिए ये सारा जीवन काम आवें
माँ ओ माँ, मुझे वेद विद्या दे दो......
माँ बोली-बेटा, मेरी भी यही है इच्छा
वेद-विद्या दे, तुम्हें बनाऊ बुद्धिमान अच्छा
धार्मिक, बलवान, तू बने निःस्वार्थी, ऐश्वर्यशाली
बढ़ कर्त्तव्य पथ पर, ला सबके लिए खुशहाली
माँ ओ माँ, मुझे वेद विद्या दे दो......
जीवन का लक्ष्य हो तेरा वेद विद्या पाना
सत्य पथ पर ही चलना, सुनना व सुनाना
अपने जीवन को इस पथ पर करता जा स्वाहा
ईश्वर उपासक बनकर फिर तू करे बस देश सेवा
माँ ओ माँ, मुझे वेद विद्या दे दो......

आर्य देवेन्द्र
दरियापुर कलां, दिल्ली

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट पर उपलब्ध

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट www.aryanirmatrisabha.com व www.aryanirmatrisabha.org से भी पत्रिका को प्राप्त किया जा सकता है। पाठकगण पत्रिका को उपरोक्त साईट से डाऊनलोड कर पढ़ सकते हैं व सत्रों की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	09 सितम्बर	दिन-मंगलवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-पूर्वाभाद्रपदा
अमावस्या	24 सितम्बर	दिन-बुधवार	मास-आश्विन	ऋतु-शरद	नक्षत्र-उत्तराफाल्गुनी
पूर्णिमा	08 अक्टूबर	दिन-बुधवार	मास-आश्विन	ऋतु-शरद	नक्षत्र-उत्तराभाद्रपदा
अमावस्या	23 अक्टूबर	दिन-बृहस्पतिवार	मास-कार्तिक	ऋतु-हेमन्त	नक्षत्र-चित्रा

धर्म संस्थापक और अद्वितीय नीतिवान-श्री कृष्ण

आर्य समाज सैक्टर 23-24, रोहिणी, दिल्ली, द्वारा दिनाँक 17.08.2014 रविवार को **श्री कृष्ण जन्मोत्सव** बड़े भव्य समारोह के रूप में मनाया। समारोह के मुख्यवक्ता राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के राष्ट्रीय महासचिव आचार्य जितेन्द्र जी (रोहतक) रहे। मंच से जनसमुह को सम्बोधित करते हुए राष्ट्र व समाज के प्रत्येक युवा वर्ग को यह संदेश दिया कि - सामान्यता जीवनचर्या में हम साधारण बुद्धि व साधारण विद्या का प्रयोग करते हैं, लेकिन जब स्वयं पर बातें लागू होती हैं तब हम विशिष्ट बुद्धि, विशिष्ट विद्या का प्रयोग करना चाहते हैं, लेकिन योग्यता न होने के कारण व सामान्यता उस दृष्टिकोण से चिन्तन न होने के कारण हम ऐसा नहीं कर पाते। आचार्य श्री ने उदाहरण स्वरूप धर्मसंस्थापक श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज के जीवन के संघर्ष की पुर्नावृति कराते हुए उपस्थित जनसमूह को कहा - देखो, जो श्री कृष्णचन्द्र जी महाराज शास्त्र और शस्त्र विद्या में निपुण रहे, जिन्होंने अपने पूरे जीवन काल में कभी भी ईश्वर की आज्ञा (वेद) का उल्लंघन नहीं किया और ईश्वर की प्राप्ति हेतु सदैव नित्य नियमित उपासना, संध्या, यज्ञ किया करते थे। जिन्होंने अपना पूरा जीवन धर्म की स्थापना में लगाया। आज उसी श्रेष्ठ पूर्वज की हम सन्तानों ने हजारों वर्षों की गुलामी के काल को भोगा क्योंकि हम अपने श्रेष्ठपूर्वजों और ईश्वर की वाणी "वेद विद्या" से दूर हो गये, दूर कर दिये गये। कारण हमारे भीतर आलस्य, प्रमाद ने घर कर लिया। और हम ज्ञान के प्रकाश से अज्ञान के अंधकार में अपना जीवन जीने को विवश हो गये, मजबूर किये गये।

आओ, अब विशिष्ट बुद्धि का प्रयोग करते हुए सत्य-असत्य का निष्पक्ष निर्णय करें। पौराणिक पुस्तकों में श्रीकृष्णजी को चोर, जार, शिखामणि कहा है, रास रचैय्या, कृष्ण कन्हैय्या, माखन चोर, वस्त्र हरण करने वाला, और भी असंख्य दोष लगाये हैं, क्या वे ऐसे थे, नहीं। **वे तो धर्मसंस्थापक और महान नीतिवान थे, और प्रतिज्ञाबद्ध थे, कि धर्म की हानि और अधर्म की बढ़ती नहीं होने दूंगा, प्राण भले चले जावें।** लेकिन हम सभी श्रीकृष्ण को पूजने वाले लोगों ने ऐसा किया? नहीं! हम तो मात्र श्रीकृष्ण के जयकारे ही लगाते रहे। और उनके उपदेशों की, चरित्र की, जीवनवृत्त की अवहेलना ही की, यह जन्मोत्सव मनाना तभी सार्थक होगा जब हम अपने श्रेष्ठ पूर्वजों की कीर्ति, यश को पुनः स्मरण करते हुए अपने जीवन को श्रेष्ठ बनायें और अपने कर्म कर्त्तव्यों द्वारा अपनी आने वाली पीढ़ियों में एक श्रेष्ठ जीवन मूल्य धारण करने की शक्ति का संचार सभी मिलकर करें। इस कार्यक्रम में लगभग 300 से भी अधिक आर्य-आर्याओं ने भाग लिया। और कार्यक्रम की अत्यन्त सराहना की।

कार्यक्रम में आर्य निर्माण जगत् के आचार्यगण- आचार्य सतीश जी, आर्य महेश जी, आर्य सतेन्द्र जी, आचार्य लोकेन्द्र शास्त्री, आर्य कमलदीप जी और आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान अधिवक्ता श्री सत्यकाम आर्य जी उपस्थित रहे। और सभी उपस्थित आर्य-आर्याओं ने जय आर्य-जय आर्यावर्त्त का जय घोष कर आर्य-आर्यावर्त्त निर्माण का संकल्प लिया। सामूहिक रूप से संध्या के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की मासिक गतिविधियाँ

बिना सिद्धांतों को समझे, उन्हें धारण किए मनुष्य का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर वेद द्वारा प्रतिपादित और ऋषि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित सिद्धांतों के माध्यम से निर्माण कार्य में संलग्न है। विगत् माह भी महिला व पुरुषों के लिए निम्न आर्य / आर्या निर्माण सत्र लगाए गए।

आर्य प्रशिक्षण सत्र

	स्थान	दिनांक
1.	आर्य समाज नांगलोई, दिल्ली	02-03 अग.
2.	ग्राम-जाणी, करनाल, हरियाणा	16-17 अग.
3.	आर्य समाज पेहवा, कुरुक्षेत्र, हरियाणा	16-17 अग.
4.	आचार्य महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.	16-17 अग.
5.	ब्राह्मण धर्मशाला, जीन्द, हरियाणा	16-17 अग.
6.	आर्य समाज चरथावल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.	23-24 अग.
7.	गाँव बन्दपुरा जिला बागपत, उ. प्र.	23-24 अग.
8.	सनातन धर्म मन्दिर सै०१०,पंचकुला, हरियाणा	23-24 अग.
9.	आर्य समाज बिजनौर, उ. प्र.	23-24 अग.
10.	गोकुलधाम आस्टा, सिहोर, मध्य प्रदेश	30-31 अग.
11.	आदर्श जनता इन्टर कॉलेज औंग फतेहपुर, कानपुर	30-31 अग.
12.	आर्य समाज करनाल रोड़, कैथल, हरियाणा	30-31 अग.
13.	आर्य समाज शिवाजी कॉलोनी रोहतक (उपासना सत्र)	30-31 अग.

श्रावणी उपाकर्म पर्व

श्रावणी मास की पूर्णिमा को श्रावणी उपाकर्म पर्व का हमारी वैदिक परम्परा में विशेष महत्त्व है। विद्या हमारे हर कार्य का आधार है और विद्या के ही महत्त्व को यह पर्व दर्शाता है। इसलिए इसका महत्त्व और बढ़ जाता है।

इसी कड़ी में गत 10 अगस्त को आर्यों के द्वारा लगभग 100 स्थानों पर श्रावणी उपाकर्म पर्व मनाया गया। विद्या की वृद्धि व उसके महत्त्व को जन-जन तक पहुँचाने के लिए इस पर्व की व्यापकता के महत्त्व पर भी आर्य उपदेशकों ने सभी स्थानों पर प्रकाश डाला। प्राचीन काल से ही श्रावण मास की पूर्णिमा का यह पर्व इसी रूप में मनाया जाता रहा है। हमारी परम्पराओं के लोप होने का ही यह एक और उदाहरण है कि बाद के काल में से इसे रक्षा बन्धन का रूप दे दिया गया।

इस अवसर पर हजारों आर्यों व आर्याओं के द्वारा यज्ञोपवीत परिवर्तन किया गया जो कि विद्या व अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं का चिन्ह है। साथ ही साथ यह संकल्प भी लिया गया कि वेद की विद्या को घर-घर पहुँचाने का कार्य व इसके लिए संघर्ष निरन्तर रहेगा।

सूचना

सभी आर्यगणों से अनुरोध है कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों सम्बन्धी सूचना पत्रिका के ई-मेल पते :- krinvantovishwaryam@gmail.com पर भेंजे साथ ही सम्बन्धित चित्र (फोटो) भी इसी पते पर भेज देंवे जिससे कि उनको समय पर पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके

संध्या काल

भाद्रपद मास, शरद ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(11 अगस्त 2014 से 09 सितम्बर 2014)

प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 30 मिनट से (7.30 P.M.)

श्रावण मास, शरद ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(10 सितम्बर 2014 से 8 अक्टूबर 2014)

प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 00 मिनट से (7.00 P.M.)

ईश्वर से प्रार्थना करने के लाभ

-आचार्य वर्चस्पति

ऋषि दयानन्द ने प्रार्थना विषय पर अपने ग्रन्थों में स्थान-स्थान पर विस्तार से लिखा है और प्रत्येक ग्रन्थ में ईश्वर से बार-बार प्रार्थना भी की है। सत्यार्थप्रकाश के अन्तिम में ऋषि दयानन्द लिखते हैं-**"प्रार्थना अर्थात् अपने सामर्थ्य के उपरान्त ईश्वर के सम्बन्ध से जो विज्ञान आदि प्राप्त होते हैं उनके लिये ईश्वर से याचना करना और इसका फल निरभिमान आदि होता है।"** प्रार्थना की इस परिभाषा से तीन बातों का परिज्ञान होता है, एक-पहले अपने सामर्थ्य का प्रयोग करके कार्य सिद्ध करने का प्रयत्न करना चाहिये। दो-ईश्वर से प्रार्थना करने पर विज्ञान आदि अवश्य प्राप्त होते हैं। तीन-प्रर्थना से अभिमान आदि दोष दूर हो जाते हैं।

सत्यार्थप्रकाश के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द ने आर्योद्देश्यरत्नमाला ग्रन्थ में भी प्रार्थना की परिभाषा और प्रार्थना के लाभ लिखे हैं-**"अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिये परमेवर वा किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य का सहाय लेने को प्रार्थना कहते हैं।"** और **"अभिमान-नाश, आत्मा में आर्द्रता, गुण-ग्रहण में पुरुषार्थ और अत्यन्त प्रीति का होना प्रार्थना का फल है।"** यहाँ ऋषि दयानन्द ने प्रार्थना के चार लाभ स्पष्ट रूप से बताये हैं। जो व्यक्ति ईश्वर से प्रार्थना नहीं करता, उसमें अभिमान रूपी दोष भरा होता है परिणामस्वरूप वह व्यक्ति अभिमान के कारण अपनी और दूसरों की हानि कर बैठता है। आर्य वही है जो ईश्वर के प्रति समर्पित होकर प्रार्थना के माध्यम से अपना अभिमान समाप्त कर लेता है।

अभिमान का नाश हो जाने पर आत्मा में आर्द्रता अर्थात् नम्रता, सरलता आ जाती है। सरल, नम्र व्यक्ति ही अच्छे गुणों को ग्रहण करने के लिये पुरुषार्थ करता है और ऐसे पुरुषार्थी व्यक्ति को ही परमेश्वर ज्ञान-विज्ञान प्रदान करता है। जब ईश्वर से ज्ञान-विज्ञान, आनन्द और बल आदि प्राप्त होता है तब आत्मा में ईश्वर के प्रति अत्यन्त प्रेम-प्रीति उत्पन्न हो जाती है। वह व्यक्ति ईश्वर का परम भक्त बन जाता है, ईश्वर की एक-एक आज्ञा का पालन करना वह अपना परम कर्त्तव्य समझने लगता है।

परन्तु आलस्य-प्रमाद के वशीभूत होकर ईश्वर से प्रार्थना कभी नहीं करनी चाहिये। ईश्वर आलसी के घर में भोजन बनाने, झाड़ू लगाने, वस्त्र धोने, खेती-बाड़ी करने या शत्रुओं से रक्षा करने के लिये नहीं आयेगा। ऋषि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं-**"जो परमेश्वर के भरोसे आलसी होकर बैठे रहते हैं वे महामूर्ख हैं क्योंकि जो परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है उसको जो कोई तोड़ेगा वह सुख कभी न पावेगा।"** यजुर्वेद में परमेश्वर आज्ञा देता है कि **मनुष्य सौ वर्ष पर्यन्त अर्थात् जब तक जीवे तब तक कर्म करता हुआ जीने की इच्छा करे, आलसी कभी न हो।**

देखो! सृष्टि के अन्दर जितने भी सजीव और निर्जीव पदार्थ हैं वे सब गतिशील रहते हैं, सब अपने-अपने कर्म और यत्न करते ही रहते हैं। चींटी हर क्षण प्रयत्न करती है, पृथ्वी सदा घूमती रहती है, वृक्ष आदि सदा घटते-बढ़ते रहते है। इन सब उदाहरणों से मनुष्यों को भी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। जैसे **पुरुषार्थ करते हुए पुरुष का सहाय दूसरा भी करता है वैसे धर्म से पुरुषार्थी पुरुष का सहाय ईश्वर भी करता है।** जो पुरुषार्थ करने की मन में इच्छा भी नहीं करता, ऐसे आलसी और कायर का भला परमात्मा भी नहीं कर सकता।

जिस प्रार्थना में सबका भला हो, सबका उपकार हो, केवल स्वार्थ के वशीभूत न हो उसी प्रार्थना को परमात्मा स्वीकार करता है। जिस प्रार्थना में दुष्टों का नाश और धर्मात्माओं की रक्षा की बात हो उस प्रार्थना में ईश्वर अवश्य सहायता करता है। संसार में पुरुषार्थ के साथ-साथ जिन लोगों ने ईश्वर से प्रार्थना की है उनके कार्य सिद्ध हुये हैं, आज भी सिद्ध हो रहे हैं और भविष्य में भी सिद्ध होंगे। आर्यों की यह परम्परा रही है कि रात-दिन पुरुषार्थ भी करना और साथ-साथ प्रातः-सायं ईश्वर से प्रार्थना भी करना। लेकिन महाभारत के समय से इस परम्परा में शिथिलता और अन्धविश्वास बढ़ता ही चला गया। **बहुत से नास्तिक हो गये जिन्होंने प्रार्थना करनी ही छोड़ दी और बहुत से केवल प्रार्थना को ही सब कुछ मान बैठे उन्होंने पुरुषार्थ छोड़ दिया।** प्रार्थना छोड़ने से दुर्योधन जैसे नास्तिकों में अभिमान, ईर्ष्या-द्वेष बहुत अधिक बढ़ गया और केवल प्रार्थना करने वालों में अन्धविश्वास ने जड़ें जमा ली। इन सबका परिणाम यह हुआ कि भयंकर विनाशकारी महाभारत के युद्ध में दुनिया के लाखों शूरवीर योद्धा आपस में कट-मरे। पाँच हजार वर्ष हो गये आज तक भी आर्य लोग उभर नहीं पाये।

महाभारत के पश्चात् तो प्रार्थना के नाम पर इस राष्ट्र का इतना नाश हुआ है कि लेखनी और वाणी व्यक्त करने में असमर्थतता अनुभव करती है। प्रार्थना के नाम पर ढोंग करने वालों ने ही सोमनाथ का मन्दिर लुटवाया था और यह देश एक हजार वर्ष तक गुलामों का भी गुलाम बना रहा। आज भी करोड़ों हिन्दू प्रार्थना के नाम पर भयंकर अन्धविश्वास और पाखण्ड में अपनी जिन्दगी बर्बाद कर रहे हैं। अलग-अलग देवतओं से अलग-अलग ढंग की प्रार्थना करते हुये लाखों अन्धभक्त मन्दिरों में मिल जाते हैं, कोई अपने देवता से बच्चे मांग रहा है, कोई अपने बच्चे के लिये दूसरे के बच्चे की बलि चढ़ा रहा है, कोई अपने भाई की कोर्ट में हार देखने के लिये प्रार्थना कर रहा है, कोई 10 लाख की रिश्वत देकर भी नौकरी की प्रार्थना कर रहा है। इनकी मूर्खता तो देखो! ये लोग भगवान को भी बुरे कर्मों में लिप्त करने का कितना बड़ा दुस्साहस कर रहे हैं। हिन्दुओं की मूर्खता पर दया भी आती है और बार-बार समझाने पर भी जब ये नहीं मानते तो क्रोध भी आता है। संसार में केवल आर्यसमाज ही इन हिन्दुओं का भला कर सकता है, अन्य कोई नहीं। प्रार्थना की ठीक-ठीक परिभाषा और प्रार्थना के ठीक-ठीक लाभ केवल आर्यसमाज ही इनको बता सकता है। दुर्भाग्य तो यह है कि आज आर्यसमाज की प्रतिनिधि सभायें और सार्वदेशिक सभा खण्ड-खण्ड हो चुकी हैं। ऐसी आपातकाल की स्थिति में राष्ट्रीय आर्य निमात्री सभा का गठन किया गया है। यह संस्था अब तक सैकड़ों प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से हजारों हिन्दुओं को प्रार्थना की ठीक-ठीक परिभाषा समझा कर उनको आर्यत्व के मार्ग में आगे बढ़ा चुकी है। परिणाम स्वरूप हजारों युवक-युवतियाँ आज उपासना करने लग गये हैं, सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन उनकी दिनचर्या का अंग बन चुका है, दूसरे युवक-युवतियों को दो दिवसीय सत्रों में लाने के लिये वे रात-दिन संघर्ष करते हुये दिखाई देते हैं। यह सब देखकर राष्ट्र के उज्जवल भविष्य की किरण का आभास होता है।

उत्तम क्वालिटी के ओ३म् ध्वज, वैदिक साहित्य व आर्यावर्त्त हवन सामग्री की प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें-

आर्य मार्किट, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक

-सम्पर्क सूत्र- 9466904890

ऋषि निर्देश..............

स्तुति, प्रार्थना और उपासना।

हम स्तुति, प्रार्थना और उपासना क्यों करें?

(१) स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण, कर्म, स्वभाव से अपने गुण, कर्म, स्वभाव का सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय का मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना।

(२) जैसे परमेश्वर के गुण हैं। वैसे गुण, कर्म, स्वभाव अपने भी करना, जैसे वह न्यायकारी है, तो आप भी न्यायकारी हावे। और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुण कीर्तन करता (है) और अपने चरित्र नहीं सुधारता, (तो) उसका स्तुति करना व्यर्थ है। (स०प्र०स०७)

(३) प्रार्थना अपने सामर्थ्य के उपरान्त ईश्वर के सम्बन्ध से जो विज्ञानदि प्राप्त होते हैं, उनके लिये ईश्वर से याचना करना और इसका फल निरभिमान आदि होता है। (स्वमन्तव्यामन्तव्य)

(४) हमारे माता पिता ईश्वर के बनाये हुए पदार्थ लेकर हमें पालते हैं, तो भी वे हम पर बड़े उपकार करते हैं। इन उपकारों का स्मरण करना हमारा धर्म है, ऐसा हम स्वीकार करते हैं। फिर जब ईश्वर ने सृष्टि उत्पन्न की तो उसके असंख्य उपकारों को हमें अवश्य स्मरण करना चाहिए।

कृतज्ञता दिखलाने वालों का मन स्वत: प्रसन्न और शान्त होता है।

परमेश्वर की शरण में जाने से आत्मा निर्मल होता है।

प्रार्थना से पश्चाताप होता है और आगे को पाप वासना का बल घटता जाता है।

सत्यता प्रेम हम में दृढ़ होते जाते है।

स्तुति अर्थात् यथार्थ वर्णन, ईश्वर (की) स्तुति करने से अपनी प्रीति बढ़ती है, क्योंकि ज्यों-२ उसके गुण समझ में आते जाते हैं त्यों-२ प्रीति अधिक जमती जाती है। उपासना के द्वारा आत्मा में सुख का प्रदुर्भाव होता है। इस उपाय को छोड़ (कर) पाप नाशन करने के लिये अन्य उपाय नहीं है। (पूना का व्या०२, ईश्वर विषयक)

(५) (प्रार्थना करने से) अभिमान का नाश, आत्मा में आद्रता, गुण ग्रहण में पुरुषार्थ और अत्यन्त प्रीति का होना प्रार्थना का फल है। (आर्योद्देश्य रत्नमाला)

प्रार्थना किस प्रकार की व्यर्थ है।

जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है, उसको वैसा ही वर्तमान करना चाहिए, अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिये परमेश्वर की प्रार्थना करें। उसके लिये जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करें, अर्थात् अपने पुरुषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है। ऐसी प्रार्थना कभी न करनी चहिए और न परमेश्वर उसको स्वीकार करता है कि जैसे हे परमेश्वर! आप मेरे शत्रुओं का नाश (करें), मुझको सबसे बड़ा (और) मेरे ही प्रतिष्ठा और मेरे (ही) आधीन सब हो जायें, इत्यादि। क्योंकि जब दोनों शत्रु एक दूसरे के नाश के लिये प्रार्थना करें, तो क्या परमेश्वर दोनों का नाश करदे। जो कोई (यह) कहे कि जिसका प्रेम अधिक (हो), उसकी प्रार्थना सफल हो जावे, तब हम कह सकते हैं कि जिसका प्रेम न्यून हो (तो) उसके शत्रु का भी न्यून नाश होना चहिए। ऐसी मूर्खता की प्रार्थना करते-२ कोई भी प्रार्थना करेगा हे परमेश्वर! आप हमको रोटी बनाकर खिलाइये, मेरे मकान में झाड़ू लगाइये, वस्त्र धो दीजिए और खेती बाड़ी भी कीजिए। इस प्रकार जो परमेश्वर के भरोसे पर आलसी होकर बैठे रहते हैं, वे महा मूर्ख हैं, क्योंकि जो परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है उसको जो कोई तोड़ेगा, वह सुख कभी न पावेगा। जैसे पुरुषार्थ करते हुए पुरुष का सहाय दूसरा भी करता है, वैसे धर्म से पुरुषार्थी पुरुष का सहाय ईश्वर भी करता है। जैसे काम करने वाले पुरुष को भृत्य करते हैं और आलसी को नहीं, देखने की इच्छा करने और नेत्र वाले को दिखलाते हैं, अन्धे को नहीं, इसी प्रकार परमेश्वर भी सबके उपकार करने की प्रार्थना में सहायक होता है, हानिकारक कर्म में नहीं। जो कोई 'गुड़ मीठा है' ऐसा कहता है उसको गुड़ प्राप्त वा उसको स्वाद प्राप्त कभी नहीं होता और जो यत्न करता है, उसको शीघ्र वा विलम्ब से गुड़ मिल जाता है। (स०प्र०स० ७)

उपासना योग का प्रथम अङ्ग क्या है?

जो उपासना का आरम्भ करना चाहे, उसके लिये यही आरम्भ है कि वह किसी से वैर न रखे, सर्वदा सबसे प्रीति करे, सत्य बोले, मिथ्या कभी न बोले, 'चोरी न करे, सत्य व्यवहार करे, जितेन्द्रिय हो, लम्पट न हो और न निरभिमानी हो, अभिमान कभी न करे, ये पाँच प्रकार के यम मिलके उपासना योग का प्रथम अङ्ग हैं।

(२) उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टांगयोग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्व-व्यापी, सर्वान्तर्यामी-रूप से प्रत्यक्ष करने के लिये जो जो काम करना होता है, वह वह सब करना चहिए।'' (स०प्र०स०७)

उपासना की रीति कैसी हो?

(१) जब उपासना करना चाहे तब एकान्त शुद्ध देश में जाकर आसन लगा, प्राणायाम कर, बाह्य विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन का नाभि प्रदेश में वा हृदय, कण्ठ, नेत्र, शिखा, अथवा पीठ के मध्य हाड़ में किसी स्थान पर स्थिर कर, अपने आत्मा और परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न हो जाने से संयमी होवे। जब (मनुष्य) इन साधनों को करता है, तब उसका आत्मा और अन्त:करण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है, नित्य प्रति ज्ञान विज्ञान बढ़ा कर मुक्ति तक पहुँच जाता है। जो आठ प्रहर में एक घड़ी भर भी इस प्रकार ध्यान करता है, वह सदा उन्नति को प्राप्त हो जाता है। (स० प्र० स० ७)

(२) सदा रात्रि पुरुष (दश) बजे शयन और रात्रि के पहिले प्रहर वा ४ बजे उठके प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिंतन करके धर्म अर्थ का विचार किया करें, और धर्म और व्यर्थ के अनुष्ठान वा उद्योग करने में यदि कभी पीड़ा भी हो, तथापि धर्म-युक्त पुरुषार्थ को कभी न छोड़ें किन्तु सदा शरीर और आत्मा की रक्षा के लिये युक्त आहार विहार औषध-सेवन, सुपथ्य आदि से निरन्तर उद्योग करके व्यवहारिक और प्रमार्थिक कर्तव्य कर्म की सिद्धि के लिये ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना भी किया करें, कि जिस परमेश्वर की कृपा-दृष्टि और सहाय से महाकठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध हो सके। **(संस्कार-विधि गृहस्थाश्रम)**

(३) इस प्रकार परमेश्वर की प्रार्थना उपासना करना! तत्पश्चात् शौच, दन्त धावन, मुख प्रक्षालन करके स्नान करें! पश्चात् एक कोश व डेढ़ कोश एकान्त जंगल में जाके योगाभ्यास की रीति से परमेश्वर की उपासना करें। सूर्योदय पर्यन्त, अथवा घड़ी आध घड़ी दिन चढ़े तक घर में आके सन्ध्योपासनादि नित्य कर्म यथा विधि उचित समय में किया करें।

(४) जब-जब मनुष्य लोग ईश्वर की उपासना करना चाहें, तब-तब इच्छा के अनुकूल एकान्त स्थान पर बैठकर अपने मन को शुद्ध और आत्मा को स्थिर करें। तथा सब इन्द्रिय और मन को सच्चिदानन्दादि लक्षण वाले अन्तर्यामी, अर्थात् सब में व्यापक और न्यायकारी परमात्मा की ओर अच्छी प्रकार से लगाकर सम्यक् चिन्तन करके उसमें अपनी आत्मा को नियुक्त करें, फिर उसी की स्तुति, प्रार्थना और उपासना को बारंबार करके अपने आत्मा को भली भाँति से उसमें लगादे? **(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिक, उपासना विषय)**

उपासना कर्म से क्या लाभ होते हैं?

(१) जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दु:ख छूटकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं।

– शेष पृष्ठ 6 पर

मांसाहार–विकास या विनाश

-आर्य सोनू हरसौला, कैथल

परमपिता परमात्मा ने भी यह विशाल सृष्टि अपने अनन्त सामर्थ्य से रची है। इस सृष्टि में जो-२ पदार्थ लगाए हैं, निष्प्रयोजन नहीं है- किन्तु एक-२ वस्तु अनेक-२ प्रयोजन के लिये रची है। इसलिये उनसे वे ही प्रयोजन लेना न्याय अन्यथा अन्याय है। जिस लिये यह नेत्र बनाया है, उससे वही कार्य सबको लेना उचित है, न कि उससे पूर्ण प्रयोजन न लेकर बीच में ही नष्ट कर दिया जावे। पक्षपात छोड़कर देखें तो ईश्वर रचित विभिन्न जीवों से मनुष्य को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अनेकों लाभ हैं। यथा-एक गाय न्यून से न्यून दो सेर दूध देती हो एवं दूसरी बीस सेर तो प्रत्येक गाय के ग्यारह सेर दूध होने में कोई शंका नहीं। इस हिसाब से एक माह में सवा आठ मन दूध होता है। एक गाय कम से कम ६ महीने एवं दूसरी अधिक से अधिक १८ महीने तक दूध देती है। दोनों का मध्य भाग प्रत्येक गाय के दूध देने में १२ महीने होते हैं। इस हिसाब से १२ महीनों का दूध ९९ मन होता है। इतने दूध को औटा कर प्रति सेर में एक छटाक चावल और डेढ़ छटाक चीनी से खीर बनाकर खावें, तो प्रत्येक पुरुष के लिये दो सेर दूध की खीर पुष्कल होती है। क्योंकि यह भी एक मध्य भाग की गिनती है अर्थात कोई-२ दो सेर दूध की खीर से अधिक खा गया कोई न्यून। इस हिसाब से एक प्रसूता गाय के दूध से १९८० मनुष्य एक बार तृप्त होते है। गाय न्यून से न्यून ८ बार ब्याती है, इसका मध्य भाग १३ बार आया तो २५७४० मनुष्य एक गाय के जन्म भर के दूध में एक बार तृप्त होते हैं जबकि अनुमान है कि ८० मांसाहारी एक गाय के मांस सें एक बार तृप्त हो सकते हैं।

इसी प्रकार भेड़, बकरी, भैंस आदि के दूध से मनुष्य का पोषण होता है। घोड़ा, बैल, खच्चर, ऊँट आदि अनेकों जीव बोझा ढोने में काम आते हैं। सुअर आदि गन्दगी को साफ करते हैं, उसी प्रकार मुर्गा, मोर सर्पादि की निवृत्ति करने से बड़ा उपकार करते हैं। कुत्ते व चमगादड़ आदि जीव पराश्रृव्य सुन सकने के कारण प्राकृतिक आपदाओं की पूर्व सूचना रोकर अथवा भिन्न वाणी बोलकर मनुष्य को देते हैं। विभिन्न जीवों से प्राप्त विभिन्न पदार्थों से अनेक प्रकार की भस्में बनती हैं, जो अनेकों व्याधियों से मनुष्य को छुटकारा दिलाती हैं। अनेक पक्षी व मेंढक आदि जीव कीड़े-मकौड़े खाकर मनुष्य को लाभ पहुँचाते हैं। अनेक पक्षी एकलिंगी पौधों का संयोग करते हैं, जिससे पौधे विकसित होकर हमें फूल-फल प्रदान करते हैं। सूक्ष्म चीटियाँ एवं दिखाई न देने वाले बैक्टिरीया आदि भी गली-सड़ी वस्तुओं (जीवों) को चट करके साफ स्वच्छ वातावरण हमें देते हैं। सांप के जहर तक को भी परिष्कृत करके औषधीय उपयोग में लिया जाता है। उसी प्रकार और भी अनेक जीव हैं जो विभिन्न प्रकार से हमें लाभ पहुँचा सकते हैं। प्राचीन काल से ही हमारे ऋषि-महर्षि जीवों से अनेक लाभ लेते आये हैं। अत: उन्होंने आत्मीयता का सम्बंध जीवों के साथ स्थापित किया । इसी कारण हमारी परम्परा बलिवैश्वदेवयज्ञ के दौरान आश्रित जीवों को भोजन देने का विधान है। किन्तु वर्तमान में हम ज्यों-२ पाश्चात्य भोगवादी संस्कृति का अन्धानुकरण करते जा रहे हैं, त्यों-२ ही मनुष्य के लिये लाभकारी जीवों को हम खोते जा रहे हैं, जिसकी अनुमति हमें धर्म एवं विज्ञान दोनों में से कोई नहीं दे रहा।

मांसाहार- प्रस्तुत शब्द विवेचन से मां +अंस+आहार बनता है, जिसका सीधा अर्थ माँ के अंश को खाना निकलता है। अब यदि इस शब्दार्थ प्रासंगिकता पर विचार करें तो हमारी आर्ष परम्परा से ही इसका बड़ा सुन्दर स्पष्टीकरण हमें मिलता है। विभिन्न जीवों से हमें अनेक लाभ हैं, हम जान चुके हैं। इन्हीं को ध्यान में रखकर गोकरुणानिधि: पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कहा 'भला जिनका दूध आदि खाने-पीने में आता है (अर्थात जिन जीवों से लाभ है), वे माता-पिता के समान माननीय क्यों न होने चाहिऐ? निश्चय ही ईश्वर पुत्र ये जीव विभिन्न लाभों द्वारा माता-पिता के समान ही हमारा पोषण-रक्षण करते हैं, इन्हीं लाभकारी जीवों को हम स्वार्थवश खाए जा रहे हैं। तब हमारे द्वारा माँ के अंश को खाने में क्या संदेह रहा?

वैज्ञानिक शोध-मनुष्य के आहार को लेकर विश्व में लगातार वैज्ञानिक शोध हो रहे हैं। अभी तक शोधों के निष्कर्षों के आधार पर बहुत से विशेषज्ञों ने यह माना है कि मनुष्य की प्रकृति शाकाहारी है एवं मांसाहारी भोजन शरीर विज्ञान के अनुसार मनुष्य के लिये अहितकर है। प्रतिष्ठित ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों के नेतृत्व में १७ दिसम्बर २०१२ को जारी शोध के निष्कर्षों के अनुसार इन्सानों के शुरुआती पूर्वज पेड़-पौधों की पत्तियाँ खाकर जीवित रहते थे। यह दावा अफ्रीकी देश चाड़ से मिले ३५ लाख पुराने तीन जीवाश्मों के दातों की जाँच करने के पश्चात किया गया है। चाड, फ्रांस एवं अमेरिकी वैज्ञानिकों ने जीवाश्म के दातों में मौजूद कार्बन आइसोटोप की जाँच की, जो शाकाहारी होने की वजह से दातों में जमा हो जाता है। इसी तरह हाल ही में स्वीडन में ५५००० स्वस्थ मध्यम आयु की महिलाओं पर हुए शोध के अनुसार जो महिलाएं मांसाहारी भोज्य प्रदार्थों का सेवन नहीं करती, उनमें वजन बढ़ने की संभावना, मांसाहारी भोज्य प्रदार्थों का सेवन करने वाली महिलाओं की अपेक्षा कम पाई गई। इस शोध में यह भी पाया गया कि जो महिलाएं डेयरी प्रोडक्ट्स का सेवन कर रही थीं-पर मीट, अंडे, मछली, चिकन आदि का सेवन नहीं कर रही थी, बी. एम. आई. (बॉडी मास इंडैक्स) कम था। बोस्टन में टफ यूनिवर्सिटी में (यू एस डी ए) ह्यूमन न्यूट्रीशिन रिसर्च सैन्टर के विशेषज्ञ पी. के. न्यूबी के अनुसार जिन लोगों में मोटापा या वजन कम बढता देखा जाता है, वे शाकाहारी आहार का सेवन करते हैं। इसके पूर्व भी कई शोधों ने इस पर प्रकाश डाला है कि शाकाहारी डाइट स्वास्थ्य को बहुत से लाभ देती है जैसे रक्तचाप सामान्य रहना, हृदय रोग कम होने की संभावना, मधुमेह व कंेसर से सुरक्षा आदि। हमारे महान पूर्वज इन तथ्यों से अनभिज्ञ न थे। इसलिए उन्होंने मानव जाति को शाकाहार का ईश्वरीय संदेश सिखाया। देखो! जिन जीवों को सहयोगी बनाकर हम उत्तम स्वाथ्य जैसे अनेकों लाभ ले सकते हैं, उन्हीं को शत्रु बनाकर हम विभिन्न बीमारियों एवं प्राकृतिक असन्तुलन को बढा़वा दे रहे हैं। तुच्छ लाभ के लिए लाखों प्राणियों को मार महापापी बन रहे हैं।

अत: यदि हम स्वयं को ऋषिपुत्र मानते हैं तो धर्म एवं विज्ञान जिस कार्य का निषेध कर रहे हैं, उसे इसी क्षण त्यागने की प्रतिज्ञा करें। अन्यथा विकास के नाम पर विनाश की ओर जा रही मानव जाति को संभलने का भी अवसर न मिलेगा।

पृष्ठ 5 का शेष

इसलिये परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चहिए।

(२) आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दु:ख प्राप्त होने पर भी न घबरावेगा और सब को सहन कर सकेगा, क्या वह छोटी सी बात है? और जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, और उपासना नहीं करता, वह कृतघ्न और महा मूर्ख भी होता है, क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिये दे रखे हैं, उस का गुण भूल जाना ईश्वर ही की न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है। (स० प्र० स० ७)

(३) उसके अविद्यादि क्लेशों तथा रोग रुप विघ्नों का नाश हो जाता है, दु:ख की प्राप्ति, मन का दुष्ट होना, शरीर के अवयवों का कम्पना, श्वास और प्रश्वास के अत्यन्त वेग से चलने में अनेक प्रकार के क्लेशों का होना, जो कि चित्त को विक्षप्र कर देते हैं, ये सब क्लेश अशान्त चित्त वाले को प्राप्त होते हैं, शान्त चित्तवाले को नहीं और उनके छुड़ाने का मुख्य उपाय यही है कि जो केवल एक अद्वितीय ब्रह्म-तत्व है उसी में प्रेम और सर्वदा उसी की आज्ञा पालन में पुरुषार्थ करना है, वही एक उन विघ्नों के नाश करने को वज्र-रुप शास्त्र है, अन्य कोई नहीं, इसलिये सब मनुष्य को अच्छी प्रकार प्रेमभाव से परमेश्वर के उपासना योग में नित्य पुरुषार्थ करना चाहिए, कि जिससे वे सब विघ्न दूर हो जाएं। **(ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, उपासना विषय)**

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

आर्य समाज परिवार के सत्र के द्वारा, सबसे स्पष्ट अगर किसी का बोध होता है वह ईश्वरीय सत्ता का, साथ ही भारत के गौरवमय इतिहास का बोध हुआ। आर्य क्या होता है कौन होता है यह पता चला। सत्र के माध्यम से राष्ट्र के प्रति हमारा क्या दायित्व है, यह पता चला और वैदिक ज्ञान ही हमारा लक्ष्य है। वेदों के सिद्धान्त ही जीवन को बदलने की क्षमता रखते हैं इसको व्यवहारिक रुप से सरल उदाहरणों से समझाया गया। तन-मन धन से राष्ट्रिय आर्य निमात्री सभा का सहयोग करूंगा।

अर्जुन त्यागी, आयु-24 वर्ष, योग्यता- बी.कॉम., एल. एल. बी.
कार्य- छात्र, निवास-नन्द कॉलोनी, पेहवा, हरियाणा

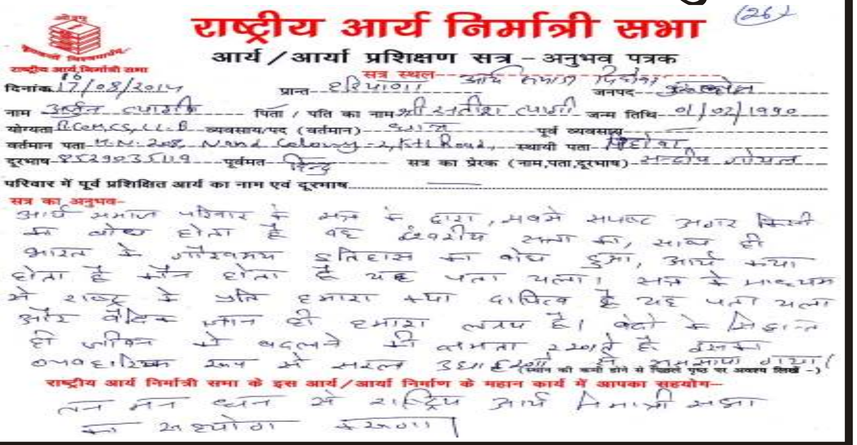

बहुत अच्छा रहा अनुभव। आज से मैं एक अलग तरह सोच, आर्य सोच के साथ अपने जीवन में आगे बढ़ने का संकल्प साथ लेकर जा रहा हूँ। हमारे वैदिक धर्म के बारे में जिसका हमें ज्ञान नहीं था इस सत्र से हमें उस ज्ञान का पता चला। राष्ट्रभक्ति की भावना जागी, आर्य का जो संकल्प है उसे पुरा करने में जो भी मैं योगदान कर सकता हूँ अपने सामर्थ्य अनुसार करूंगा।

राजपाल कौशिक, आयु-26 वर्ष, योग्यता-बी.ए.
निवास-गांव फफडाना, असन्ध करनाल, हरि.

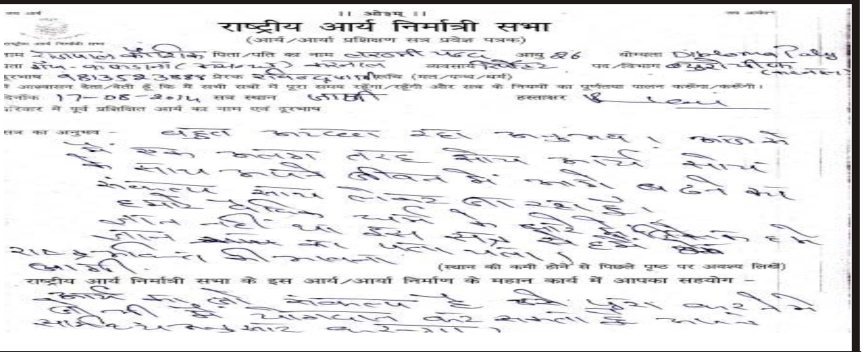

मुझे इस सत्र से बहुत गहन जानकारी हासिल हुई है। अपने वेदों के बारे में ज्ञान मिला। जिससे मेरा ज्ञान बढ़ा, इससे पहले मैं अन्धकार में जीवन यापन कर रहा था। आज यह सत्र सुनकर मेरी आँखें खुल गई हैं। पहले मुझे अपने धर्म के बारे में मालूम नहीं था। आज के बाद में वेदों का पालन करते हुए, आर्य समाज के निर्माण में अपना पूरा सहयोग करूंगा और प्रचार-प्रसार भी करूंगा।

जसबीर सिंह, आयु-33 वर्ष, योग्यता-बी.ए.
निवासी-जानी, करनाल, हरियाणा

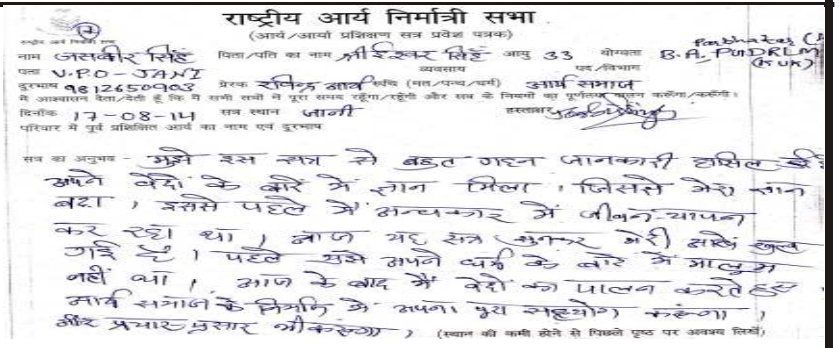

आर्य जी के विचारों से मेरे जीवन में एक नई उमंग जाग गई है, मुझे सत्य की राह पर चलने की दिशा मिल गई है, मुझे अपने धर्म के बारे में ज्ञान प्राप्त हो गया है, आज से पहले मैं अन्धेरे में था। आयार्य जी ने मुझे एक नई रोशनी प्रदान की है। जय आर्य, जय आर्य, जय आर्य, आर्यावर्त, आर्यावर्त आर्यावर्त। मैं इस सभा में तन, मन से हमेशा साथ रहूँगा।

आर्य प्रवीण कुमर आयु-30 वर्ष, योग्यता-12वीं. आई.टी.आई.
पद-मैकेनिक, निवासी-जानी, करनाल, हरियाणा

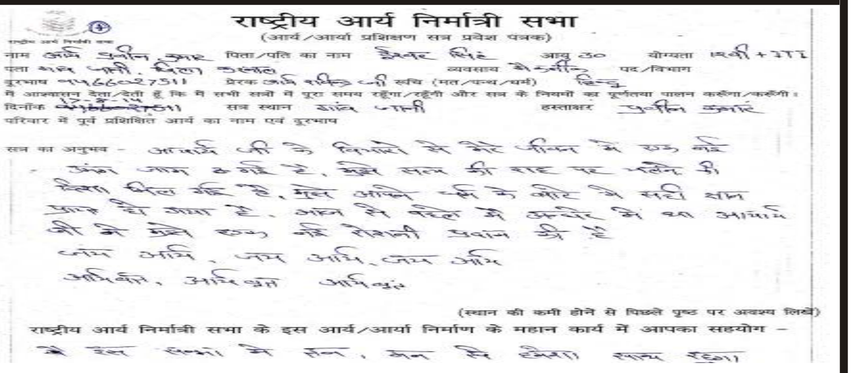

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्रों की सूचना

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आर्य विद्या देने हेतू द्विदिवसीय सत्रों का आयोजन प्रतिमाह अनेक स्थानों पर हो रहा है। सत्रों की जानकारी समय पर सभी को मिल सके इसके लिए आगामी सत्रों की सूचना, जो अब तक निश्चित हो चुके हैं, दी जा रही है। इसके अलावा भी कई सत्र जो बाद में निश्चित होते हैं उन की सूचना एस.एम.एस. द्वारा आर्यों को भेज दी जाती है। सभी आर्यों से यह भी निवेदन है कि सत्रों की तिथियाँ कम से कम एक माह पहले निर्धारित करके सभा के महासचिव आचार्य जितेन्द्र जी से अनुमति ले लें, जिससे उनकी सूचना भी पत्रिका में दी जा सके।

आगामी आर्य प्रशिक्षण सत्र

क्र.सं.	स्थान	दिनांक	सम्पर्क	दूरभाष
1.	गाँव-अटौर नगला, जिला गाजियाबाद, उ. प्र.	06-07 सितम्बर	आर्य कृष्णपाल	9971580830
2.	आर्य समाज शिवाजी कॉलोनी, रोहतक, हरियाणा	06-07 सितम्बर	आर्य वेदप्रकाश	
3.	आर्य समाज मोहिदीनपुर करनाल, हरियाणा	13-14 सितम्बर	आर्य राजकुमार	9416368474
4.	आर्य समाज, फिरोजपुर झिरका, मेवात, हरियाणा	13-14 सितम्बर	आर्य अमरचन्द	9812606465
5.	ब्राह्मण धर्मशाला, जीन्द, हरियाणा	13-14 सितम्बर	आर्य कुलबीर	9416460416
6.	चौपाल निकट शिव मन्दिर, कंझावला, दिल्ली	13-14 सितम्बर	आर्य सुरेश	9999645546
7.	आर्य समाज, सैक्टर-33, नोएडा, उ० प्र०	20-21 सितम्बर	आर्य रामदेव	9868129835
8.	आचार्य महाविद्यालय, चित्तौड़ा झाल मुजफ्फरनगर, उ.प्र.	20-21 सितम्बर	आर्य नरेन्द्र	9719940999
9.	अम्बेडकर भवन, संजय पुरी मोदीनगर, गाजियाबाद उ. प्र.	20-21 सितम्बर	आर्य नारायण सिंह	9758403646

आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16

आर्य निर्माण — राष्ट्र निर्माण

आर्य समाज सैक्टर-23-24, रोहिणी, दिल्ली में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव (17 अगस्त 2014) में मुख्य वक्ता आचार्य जितेन्द्र जी

श्रावण मास की पूर्णिमा (10 अगस्त 2014) को विभिन्न स्थानों पर मानाये गया "श्रावणी उपाकर्म पर्व"

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पत्रिका की सदस्यता हेतु 100 रुपए द्विवार्षिक शुल्क मनीआर्डर से प्रांतीय कार्यालय के पते पर भेजें, स्थानीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्यों के पास भी शुल्क जमा कर रसीद ले सकते हैं। पूरा पता अवश्य लिखें, न पहुंचने पर दूरभाष से कार्यालय में सूचना दें। जिन सदस्यों की सदस्यता एक वर्ष से अधिक पुरानी है वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लेवें।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक एवं सम्पादक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रेस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।